अभी शीघ्र ही दर्शनों
से कृतार्थ होंगे [भगवान्
श्री गौरीशंकर की कृपा
से आशा है स्वास्थ्य
भी ठीक होगा।
सभी पूज्यजनों के
चरणारविन्दों में सादर
प्रणाम।
श्रीचरणों के दर्शनों का
उत्कर अभिलाषी -
रवि शर्मा त्रिवेदी

पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY




सेवा में
श्रीयुत परमपूज्य गुरुदेव
द्वारा
श्री पं. गोविन्द जी मिश्र
चौबुर्जा
भरतपुर (राजस्थान)

श्री हरि:

डी।३०६ क्वाऊप मोतीबाग
नई दिल्ली...२१.
21 अक्टूबर, १९६३.

परम पूजनीय गुरुदेव,

चरण कमलों में सादर साष्टांग प्रणाम स्वीकार हो। श्री चरणों की कृपा से मुझे दिल्ली के गवर्नमेन्ट हायर सैकेन्डरी स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई है। वेतन अभी २४०रू० ही है पर M.A. पास होने पर ३५०रू० मासिक मिलने की आशा है। श्री चरणों के दर्शनों को पिताजी बक्शी साहब के वहाँ गये थे लेकिन [illegible] के दर्शनों से वंचित ही रहे। विश्वास है कि अब हम

यदि किसी प्रकार उपस्थित
होसकुंगा इसके लिये पूर्व
बहमी ७- को
सूचित करूंगा। पूज्य-चरणों
प्रणाम

सौभाग्यवती को जयश्रीकृष्ण
दीजे

आपका वैद्य पं-चानन शर्मा
मोड़ल
श्रीपद वैद्य [illegible]
ग्रा॰ पो॰ लहरा गागा [illegible]

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS FOR THE REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY




श्री पं॰ जयशंकरजी
ग्रा॰ पो॰ सोहाना
जि॰ रोपड
(पंजाब)

4-7-73

श्री माननवर पं. जयशंकर जी आज
श्री हरिराम जी का पत्र मिला है कि
पूज्यपाद श्री जी महाराज का जन्मोत्सव
8-7-73 को आपके लाहा ग्राम में
मनाया जायगा गतवर्ष भी आपके यहां
नहीं पहुंच सका इसवर्ष भी इसादिन
एक रिश्तेदार के जरूरी शादी में सम्मिलित
होना है श्री पूज्य चरणों के दर्शन करने की
उत्कट इच्छा होते हुए भी संभव है वंचित
ही रहूं करबद्ध प्रार्थना चरणों में कर रहा
हूं इस जन्मोत्सव के बाद यदि लहरा या
पटियाला ~~[illegible]~~ में आना हो सके तो
दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे। यही निवेदन है
अधिक क्या। लिखना कोई न कोई रुकावट पड़ जाती

करके आपके हृदय में स्थान
प्राप्त किये हुये श्री वि. ड़ि-
बकशी जी के सपरिवार और
श्रीरामरतनजी- आदि यात्रों को
मेरा नारायण स्मर,
जय माता'
पुत्रानु कम्पा समेत।
दुर्गे अपवर्ग दाइनी ॥
अवधूतेर्द्रसरस्वति·
(पाण्डि ग्रन्थ मण्डलि
तेनालि
जिला - गुंटूर-(A.P)




Sri Sri Sri

Srimadamrita Vagbhavachar-ya ji
C/o V.D. Bakshi jee
33 A, Hindusthan Housing Factory
Jangpura
NEW DELHI - 14

जय माता पूतानुकम्पा समेता ।
दुर्गे अपवर्ग दाइनी ॥

हरेराम सप्ताहम्

प्रात: स्मरणीय = विं जनेपाउ ९-१-६८

श्री श्री श्री श्रीमद् मृत वागम्भणाचार्य
जी को सादर 'ओं नमो नारायणे' स्मरण,
टला, शामको ४ बजे पहुंचा था, बीचमें
१२ घंटे सिकन्दराबादमें ठहरा था।
आप आरामसे दिल्ली पहुंच गये
होंगे। आपके छायामें जितने रात्रि-
यां बीती थीं वह सब ब्रह्मरात्रियां हैं।
यह मेरा सौभाग्य है, याचे तवदयां
श्रीमन् चित्त शुध्दि प्रसादिनीम् ॥
याचे तव दयां श्रीमन् चित्त शुध्दि
प्रसादिनीम्, याचे तव दयां श्रीमन्
चित्त शुध्दि प्रसादिनीम् ॥

रामदास अपनी मां के साथ
सप्ताहमें है। आपके श्री चरणोंमें
[illegible]




पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY

Shree V. D. Bakhshi,
Office Superintendent,
Hindustan Housing Factory,
Bhogal, Jungpura, New Delhi

Shree Ram Ashram, Fateh Kadal,
Srinagar, Kashmir 8.4.63

My dear brother

Namaskar. I got a p.c. in which the health of Respectable Mahatma Ji is written as not good. Will you be kind enough to write all in detail by the return of mail as the news have caused great anxiety. I am writing this

P.C. from Akhnoor, Jammu & hope to reach Srinagar on 12th inst. - I shall see the man of Silk House & shall despatch it myself as soon as possible. I did not see P. Balji Nath Ji Pandit although I was in Jammu till 6th inst. Kindly convey my respects to Respectable Mahatma Ji, Namaskars to elders & love to young ones.

Yours affectionately
Brahmacharin
Janki Nath.

आगे अब आप जिस वखत वृन्दा
वन था दिल्ली पधारें उस वखत
मुरादाबाद से उसे बुला लेंगे
और इस पत्र का जवाब जल्दी कृपा
कर देना जी बा(ला) आप बहुत
याद आती है जल्दी वृन्दावन
पधारो दुकान का काम चल रहा है
उसमे मैलचर नुकसान गया है।
आपका श्री आशीष पं. बालकृष्ण




चिट्ठी मिलै नन्द बाबा जी महाराजी
को
छोटे लाल ओमकारनाथ
नं. २० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
कलकत्ता।

: श्री मते रामानुजाय नमः

वृन्दावन
ता॰ १४।४।१८

सेवा में श्रीमान् महोदय बाबाजी महा
राज को पं॰ नत्थाराम वं. पं॰ बालकृष्ण का
चरनो में साष्टांग दंडवत स्वीकार
हो आगे यहां पर सब राजी खुसी है
आप की राजी खुसी श्री जी से हम मना
ते चहाते रहते हैं आगे आप का
पत्र मिला पढ कर बहुत आनंद हु
आ और मुरादाबाद वाली माजी को
भी पत्र आप का सुना दीया और इन
का लड़का मुरादाबाद ही मोजूद
है आप के पत्र की बाट निहार रहे थे
जब आप कहते तब इस लड़का
को बुलाते उसकी बोही पहलीसी
हालत है और उसके कई पत्र यहां
पर आये सब में लिखा था कि मैं
बहुत मुसीबत में हूं बाबा जी महाराज
कि जो बिन्दावन हो तो मैं चला

का विचार हो तो मैं कुछ
दिनों तक खाने की औषध
तैय्यार करके आपको भेज
दूँगा। आपने स्वास्थ्य की
सूचना देने की कृपा करें।

विनीत
रामनाथ शर्मा टीचर
गवर्ट॰ हाई॰ स्कूल कालका

To
Sh. Gobind Mishar
ji Maharaj.
C/o
Vaid Brihaspati Dev
Thiguna
BHOGAL Jangpura
New Delhi



श्री गणेशाय नमः

कालका
26.12.60

श्रीयुत महाराज जी,

चरणकमलों में दण्डवत् प्रणाम

आपके रोगी होने का समाचार सुनकर मन को अतीव दुःख व चिन्ता हो रही है। आप कसीस आदी तेल को मसों पर लगाएँ। ईश्वर आपको शीघ्र ही नीरोग करेगा। मसे यदि बाहर हैं और छोटे हैं तो खुली मौसम में निकाले जा सकते हैं। आपका अभी यहीं रहने

श्री नन्दलाल शास्त्री [illegible] जी

~~[illegible]~~ आपका एक पत्र पहुँचा आया था तथा एक बैरंग [illegible] का मिला [illegible] का आया था। श्रीमान को [illegible] तथा शुद्ध होने पर ही [illegible] [illegible] जाएगा [illegible] आपका [illegible] को [illegible] है [illegible] कब का? [illegible] [illegible] को हो जाएगा [illegible] आपने [illegible] के बारे में [illegible] को। आपका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बच्चों को [illegible]

[illegible]

२३.५.६०

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER
केवल पता
ADDRESS ONLY




BHARTPUR

श्री आचार्य जी
C/o
श्री गोविन्द जी मिश्र
चौबुर्जी - भरतपुर
राजस्थान

नागल

श्री-हरि श्री गुरु चरणेषु दास प्रणाम
पुष्पाञ्जलयः

पत्र आप का मिला। आप का आशीर्वाद पुरसित है। आप ने लिखा था कि चार दिन के उपरान्त पत्र लिखेंगे। परन्तु पत्र नहीं आया। प्रयागराज से बाबू रामको साहु वील तो को दिल्ली आया था- उस को हमने अच्छी तरह से समझा दिया है यदि आप वहाँ जावें तो उन का सुप्रबन्ध हो जा। यदि बाबू राम का साथ लगाना पसंद हो तो उनको केवल आप के साथ जा सकता है। परन्तु कार्य का प्रबन्ध सब इन्हीं के सिर पर है बाबा जी तो देखभाल करता है। जैसी आप की आज्ञा होगी वैसे ही किया जावेगा। पं. द्वारका प्रसाद: आप की माता जी ठीक हो गये हैं। वैद्य जी तथा सब सज्जनों की ओर से साष्टांग प्रणाम



आप को [illegible]

बालक गोविन्द ।।

मेरी बदली। अब हमीरपुर से मण्डी
को हो गई है। मैंने यहां आने को इन्कार
भी किया परन्तु आप की आज्ञा यहां
भेजने की थी। यहां मकान कुछ
काफी खुला सरकार दिया गया है।
इस लिए प्रार्थना है कि मेरे अवगुणों
को क्षमा करते हुए मण्डी पधारने की
कृपा करें। मैं भगवाई मुहल्ला में दफ्तर के
पास ही रहता हूं। [illegible]

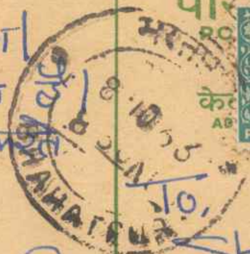
पोस्ट कार्ड
POST CARD
केवल पता
ADDRESS ONLY




श्रीमान जी विभूषित जी
Sh. V. D. c/o Bakshi.
Personal Officer
Hindustan Housing
Factory Post Office Jangpura
Delhi. DELHI-14.

आप अपनी ~~मेरा~~ तबीयत का
पत्ता जल्दी दिजियेगा।
यहाँ सब ठीक है
आपको याद करते
हैं।
— आपकी
विद्यावती

~~Chaubu~~
Chobwrja
P.O. Bharatpur
(Rajasthan)







Shree Swami ji
c/o Sh. Govind Misher Raj Pandit
~~C/o V. D. Bakshi~~
~~क्वा० नं० 331~~
~~हिन्दुस्तान हाउसिंग फैक्टरी~~
~~जंगपुरा भोगल~~
~~दिल्ली -14.~~

बम्बई:-६८
ता:-१५-६-६३

पुज्य स्वामी जी,

सादर प्रणाम,

आपका पत्र मिला जिससे पता चला कि आप अस्वस्थ है। क्या कारण है? आप अपना हाल लिखियेगा। जयपाल १ तारीख को अफ्रीका चला गया है। आपको हम 30) मनीआर्डर करके भेज रहे हैं। और किसी चीज जरुरत हो तो लिखियेगा।

आपका पत्र हमनें जिद्दी को दिखा दिया था। मेरा ख्याल है वह भी आपको कुछ भेज ही देगें।

सतपाल के यहाँ लड़का और राजपाल के यहा लड़की हुई है।

कौन सी सर्वोत्तम थेड है और वहां कहां से
उपलब्ध हो सकती है। एक बार स्वर्गीय ति. लाल
जी आपके दर्शनार्थ देहली भी ले गए
थे। परन्तु आप उपरोक्त स्थान पर न थे
जिस से वह आपके दर्शन न कर सका
"श्रीविद्या वरिवस्या" के बारे में भी लिखें
धैर्य से बाद में लिखूंगा। मैं आजकल एक
दुकान पर ACCOUNTANCY का काम करता हूं
मेरी आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई
कभी समय मिलने पर दर्शन करूंगा। शेष

---

सेवा में:
श्री श्री ... जी महाराज
पू० श्री सीतारामजी
B-66 मोती बाग ...
New DELHI नई देहली
पिन PIN ...



श्रीहरिः  आगरा.
23.

c/o KRISHAN LAL SONS
123 AJIT MARKET
AGRA-3

निवेदक दास
जगदीशलाल रत्नानी

आराध्य-चरण
पूज्य "श्री" जीमहाराज

चरणकमलों में बार बार प्रणाम। आज पूज्य मिश्रा जी का भरतपुर से पत्र आया था कि आप देहली में ही हैं। आशा करता हूं कि आप प्रभु कृपा से स्वस्थ होंगे।

निवेदन यह है कि मेरा विचार इन दिनों विज्ञान भैरव, शिवसूत्र तथा आचार्य श्री अभिनवगुप्त के ग्रन्थ पढ़ने का करता रहता है। मिश्रा जी ने लिखा था कि आपका "विज्ञान भैरव" उनके पास है। परन्तु आपकी आज्ञा के बिना वह दे नहीं सकते। यदि आप उचित समझें तो उनको लिखें। नहीं तो लिखें कि यह ग्रन्थ कहाँ से मिल सकेगा। [illegible] ग्रन्थ कहाँ से मिलते हैं और मैं कौन सा ग्रन्थ आगे पढ़ूं। शिवसूत्र पर




पोस्टकार्ड
केवल पता

आपको यहां पहुंचे श्री गोविन्द जी वृन्दावन पहुंचेंगे
गा अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि
मेरे साथ अपने दो प्रेमी भी होंगे मैंने यह
विचार किया है हम शनिवार आपके पास ११ बजे
के लगभग दर्शनार्थ पहुंचेंगे और आपसे
पुन: पुन: निवेदन भी है कि आप तैयारी रखें
ताकी आपके चरणों की सान्निध्य में ५-६
दिन वृन्दावन में बितें मैं यह पत्र आज श्री
गोविन्द जी को लिखकर [illegible]
आपने अकिंचन को याद किया है अतः

१४-८-५८

श्री पूज्यपाद गुरु-चरणेभ्यो नमः.

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ

बेशक उसमे तारीख का कुछ भी संकेत नहीं था केवल अनुमान से जानलू जाता था। आज श्री गोविन्द जी का भी पत्र आया है उन्होंने लिखा है कि आप श्रावण शुक्ला प्रतिपदा को वृन्दावन जाने का विचार है ... हो तो लौटती डाक से पत्र दीजीये श्री चरणों का वैसे तो पता नहीं देहली होंगे तो नीचे लिखे पते पर श्री बांके लाल जी राजकुमार जी गुप्त रनजीत होटल के पते पर सो मैंने आज ही ...



श्री चरणों को साथ लेकर वृन्दावन शीघ्र पहुँ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] જામનગર






पोस्ट कार्ड

केवल पता

Public

नाम श्री [illegible] गोविंद जी

पता मिस्त्री [illegible]

डाकखाना चौक [illegible]

जिला भरतपुर

શ્રીમાન્. [illegible]

પ્રાતઃ સ્મરણીય ગુરુદેવ કા લાભ

ધારણાવતાર ગંગાજી [illegible] કા પુરાણ

ગુરુદેવ ગોપાલજી [illegible] ગંગાજી કે પુરાણોં

પ્રાણ ભગવાન વિરહ [illegible] સોમનાથજી

મેં મગ્ન [illegible] રોજ [illegible] દી

શુભ વિવાહ [illegible] દીવાર કા પ્રેમ

દર્શન કિયે ઔર પ્રાણો [illegible]

[illegible] મેં શ્રી [illegible]



પ્રાપ્ત હુવા ઔર [illegible] શ્રી

कौन सी सर्वोत्तम टीका है और वह कहां से
उपलब्ध हो सकती है। एक बार स्वर्गीय ति. लाल
जी आदि के दर्शनार्थ देहली में ले जा गए
थे। परन्तु आप उपरोक्त स्थान पर न थे
जिस से वह आपके दर्शन न कर सका
"श्रीविद्या वरिवस्या" के बारे में भी लिखें
दीया से वासे लिखें। मैं आजकल एक
दुकान पर ACCOUNTANCY का काम करता हूं
मेरी आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई
और समय मिलने पर दर्शन करूंगा। शेष

---

सेवा में,
श्री [illegible] जी महाराज
पं० [illegible]
B-66 [illegible]
New DELHI - [illegible]

पिन PIN



193 Raja Market
Agra-3
C/o Krishan Lal Sons

श्रीहरिः

आगरा
23.

आदरणीय चरण

पूज्य "श्री" स्वामीजी महाराज

चरणकमलों में बार बार प्रणाम्। आज पूज्य मिश्रा जी का भरतपुर से पत्र आया था कि आप देहली में ही हैं। आशा करता हूं कि आप प्रभु कृपा से स्वस्थ होंगे।

निवेदन यह है कि मेरा विचार इन दिनों विज्ञान भैरव, शिवसूत्र तथा आचार्य अभिनवगुप्त के ग्रन्थ पढ़ने का रहता है। मिश्रा जी ने लिखा था कि आपका "विज्ञान भैरव" उनके पास है। परन्तु आपकी आज्ञा के बिना वह दे नहीं सकते। यदि आप उचित समझें तो उनको लिखें। नहीं तो लिखें कि यह ग्रन्थ कहां से मिल सकेगा। अभिनव जी के ग्रन्थ कहां से मिलते हैं और मैं कौन सा ग्रन्थ आज कल पढ़ूं। शिव सूत्र पर

आप अपनी ~~सेवा~~ तबीयत का
पत्ता जल्दी दिजियेगा।
यहाँ सब ठीक है
आपको याद करते
हैं।
आपकी
विद्यावती

~~Chato~~
Chobwrja
P.O. Bharatpur
(Rajasthan)








Shree Swami ji
c/o Sh. Govind Mishra Raj Pandit
~~C/o V. D. Bakshi~~
~~क्वा० नं० 331~~
~~हिन्दुस्तान हाउसिंग फैक्टरी~~
~~जंगपुरा भोगल~~
~~दिल्ली - 14.~~

बम्बई :-६८
ता:-१५-६-६३

पुज्य स्वामी जी,

सादर प्रणाम,

आपका पत्र मिला जिससे पता चला कि आप अस्वस्थ है। क्या कारण हैं? आप अपना हाल लिखियेगा। जयपाल १ तारीख को अफ्रीका चला गया है। आपको हम 30) मनीआर्डर करके भेज रहे हैं। और किसी चीज की जरूरत हो तो लिखियेगा।

आपका पत्र हमने जिद्दी को दिखा दिया था। मेरा ख्याल है वह भी आपको कुछ भेज ही देंगे।

सतपाल के यहाँ लडका और



सतपाल के यहां लड़की हुई है।

मेरी बदली। अब हमीरपुर से मण्डी
को हो गई है। मैंने यहां आने को इन्कार
भी किया परन्तु आप की आशा यहां
भेजने की थी। यहां मकान कुछ
काफी खुला सरकारी मिल गया है।
इस लिए प्रार्थना है कि मेरे अवगुणों
को क्षमा करते हुए मण्डी पधारने की
कृपा करें। मैं भगवाई मुहल्ला में दफ्तर के
पास ही रहता हूं।

पोस्ट कार्ड
POST CARD
केवल पता
ADDRESS ONLY



श्रीमत्तु "श्री" विभूषित मण्डी
आशुतोष तथा पशुपतिजी 3.9.67

आपने भस्मासुर का साष्टाङ्ग प्रणाम स्वीकार करें। इस के पूर्व भी एक पत्र श्री गोविन्दजी द्वारा आप की सेवा में प्रेषित कर चुका हूं आशा है मिल गया होगा। आप की कृपा से मेरा पागलपन अब कुछ २ ठीक होने लगा है लेकिन कभी २ दौरा भी हो जाता है। मेरी दशा पर करुणा करते हुए और अपनी विरुद "आशुतोष" को सार्थक करने के लिए मुझे क्षमा प्रदान करें।

दीन दयालु बिरद संभारी,
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

[illegible]

[illegible] आपको एक पत्र पहुंचा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२३·५·६०




पोस्ट कार्ड

POST CARD

साथ का कार्ड जवाब के लिए

THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER

केवल पता

ADDRESS ONLY




श्री: आचार्य जी

c/o

श्री गोविन्दजी मिश्र

चौबुर्जी - भरतपुर

राजस्थान

५।३।५८

श्री-इष्ट श्री गुरु चरणेषु राधा प्रणाम

पूज्यपाद स्वरूपः

पत्र आप का मिला। आप का आशीर्वाद प्राप्त है। आप ने लिखा था कि चार दिन के उपरान्त पत्र लिखेंगे। परन्तु पत्र नहीं आया। = प्रयागराज से बाबू राम का साहू भी ता० को दिल्ली आया था- उस को इस ने अच्छी तरह से समझा दिया है। यदि आप वहाँ जावें तो रहने का सुप्रबन्ध होगा। यदि बाबू राम को साथ लगाना जरूरी हो तो ३० ता० के बाद आप के साथ जा सकता है। परन्तु काम का प्रबन्ध सब इसी के सिर पर है। बाग का जो देखभाल करता है। जैसी आप की आज्ञा होगी वैसे ही किया जावेगा। पं० हरिकान्त: अब आप को ठीक हो गये हैं। वैद्य जी तथा सब सज्जनों की ओर से साष्टांग प्रणाम



आप का पत्र ...

बतावें जावेंगे।

को विचार हो तो मैं (कुछ
दिनों तक खाने की औषध
तैयार करके आपको भेज
दूंगा। अपने स्वास्थ्य की
सूचना देने की कृपा करें।

विनीत
रामनाथ शर्मा टीचर
गवर्ट. हाई. स्कूल कालका

पोस्टकार्ड
केवल पता

To
Sh. Gobind Mishar ji Maharaj
C/o Vaid Brihaspati Dev Triguna
BHOGAL Jangpura
New Delhi



श्री गणेशाय नमः

कालका
26.12.60

श्रीयुत महाराज जी,

चरणकमलों में दण्डवत् प्रणाम

आपके रोगी होने का समाचार सुनकर मन को अतीव दुःख व चिन्ता हो रही है। आप कसीस आदी तेल को मसों पर लगाएँ। ईश्वर आपको शीघ्र ही नीरोग करेगा। मसे यदि बाहर हैं और छोटे हैं तो खुली मौसम में निकाले जा सकते हैं।



आपका अभी यहीं रहने

: श्री मते रामानुजाय नमः

वृन्दावन
ता॰ १४।४।४८

सेवा में श्रीमान महोदय बाबाजी महा
राज को पं॰ नत्थाराम वं पं॰ बालकृष्ण का
चरनो में सास्टांग दंडवत स्वीकार
हो आगे यहां पर सब राजी खुसी है
आप की राजी खुसी श्री जी से हमेसा
नेक चहाते रहते है आगे आप का
पत्र मिला पढ कर बहुत आनंद हु
आ और मुरादाबाद वाली माजी को
भी पत्र आप का सुना दीया और उन
का लड़का मुरादाबाद ही मोजूद
है आप के पत्र की बाट निहार रहे थे
जब आप कहते तब उस लड़का
को बुलाते उसकी नौकरी पहलीसी
हालत है और उसके कैई पत्र यहां
पर आये सब में लिखा था कि मै
बहुत मुसीबत मे हू बाबा जी लिखते
कि बाबा वृन्दावन में ... मैं ...

आऊ अब आप जिस वखत वृन्दा
वन या दिल्ली पधारें उस वखत
मुरादाबाद से उसे बुला लेंगे
और इस पत्र का जबाब जल्दी कृपा
कर देना जी बाबा। आप बहुत
याद आती है जल्दी वृन्दावन
पधारो दुकान का काम चल रहा है
उसमे मैलपर नुकसान गया है।
आपका श्री श्री काली पं. बालकृष्ण

POST CARD
ADDRESS ONLY




चिट्ठी मिले नन्द बाबा जी
को
छोटेलाल जी मक्खनलाल
नं. २० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
कलकत्ता




पोस्ट कार्ड
POST CARD

केवल पता
ADDRESS ONLY

Shree V. D. Bakhshi,
Office Superintendent,
Hindustan Housing Factory,
Bhogal, Jungpura, New Delhi

Shree Ram Ashram, Fateh Kadal,
Srinagar, Kashmir 8.4.63

My dear brother

Namaskar. I got a pc in which the health of Respectable Mahatma Ji is written as not good. Will You be kind enough to write all in detail



caused great anxiety. I am writing this

p.c. from Akhnoor, Jammu & hope to reach Srinagar on 12th inst. I shall see the man of Silk House & shall despatch it myself as soon as possible. I did not see P. Balji Nath Ji Pandit although I was in Jammu till 6th inst. Kindly convey my respects to Respectable Mahatma Ji, Namaskars to elders & love to young ones.

Yours affectionately
Brahmacharia
Janki Nath.

करके आपके हृदय में स्थान
प्राप्त किये हुये श्री वि. डि-
बकशी जी के सपरिवार और
श्रीरामरतन जी - आदि यातो को
मेरा नारायण स्मर
जय माता'

पुत्रानु कम्पा समेत।

दुर्गा अपवर्ग दाइनी ॥

अवधूत वर्द्धम सरस्वति.
(प्रा पत ग्रन्थ मण्डलि
तेनालि
जिला - गुंटूर (A.P)




Sri Sri Sri

Srimadamrita Vaghbhavachar-
yaji
C/o V.D. Bakshi jee
33 A, Hindusthan Housing
Factory
Jangpura
NEW DELHI - 14

जय माता दूतानुकंम्पा समेता ।
दुर्गे अपवर्ग दाइनी ॥

हे राम लप्ताहम्

प्रातः स्मरणीय = विं जनेपाड ९-१-६२

श्री श्री श्री श्रीमद्‌ मृत वाग्भवाचार्य जी को सादर 'ओं नमो नारायणं स्मरण, टता, शामको ४ बजे पहुंचा था, बीच में १२ घंटे सिकन्दराबाद में ठहरा था। आप आराम से दिल्ली पहुंच गये होंगे। आपके छायामें जितने रात्रियां बीती थीं वह सब ब्रह्मरात्रियां हैं। यह मेरा सौभाग्य है, याचे तवदयां श्रीमन् चित्त शुध्दि प्रसादिनीम् ॥ याचे तव दयां श्रीमन् चित्त शुध्दि प्रसादिनीम्, याचे तव दयां श्रीमन् चित्त शुध्दि प्रसादिनीम् ॥

रामदास अपनी माँ के साथ



... है। आपके ... जगह में ...
... प्रणाम किये हैं। आपको सेवा

अभी शीघ्र ही दर्शनों
से कृतार्थ होंगे भगवान्
श्री गौरीशंकर की कृपा
से आशा है स्वास्थ्य
भी ठीक होगा।
सभी पूज्यजनों के
चरणारविन्दों में सादर
प्रणाम।
श्रीचरणों के दर्शनों का
उत्कट अभिलाषी -
रवि शर्मा त्रिवेदी




सेवा में
श्रीयुत परमपूज्य गुरुदेव
द्वारा
श्री पं. गोविन्द जी मिश्र
चौबुर्ज
भरतपुर (राजस्थान)

श्री हरिः

डी।३० [illegible] मोती[illegible]
नई दिल्ली...३.
२१ अक्टूबर, १९६३.

परम पूजनीय गुरुदेव,

चरण कमलों में सादर साष्टांग प्रणाम स्वीकार हो। श्री चरणों की कृपा से मुझे दिल्ली के गवर्नमैन्ट हायर सैकेन्डरी स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई है। वेतन अभी २४०रू० ही है पर M.A. पास होने पर ३५०रू० मासिक मिलने की आशा है। श्री चरणों के दर्शनों को पिताजी बख्शी साहब के वहां गये थे लेकिन दुर्भाग्य से दर्शनों से हम वंचित ही रहे। विश्वास है कि अब

यदि किसी प्रकार उपलब्धित
हो सकें इसके लिये पूर्ण
वहीं 7- के
प्रयत्न करूंगा। पूज्य-वर्गों
प्रणाम

सभी भ्रातृवर्गों को जयश्रीकृष्ण
जी

आपका वैद्य पं॰ चानन शर्मा
मौजूल
श्रीप्य वैद्य [illegible] औषधालय
मु॰ पो॰ लहरा गागा मण्डी जि॰ संगरूर

पोस्ट कार्ड
POST CARD
साथ का कार्ड जवाब के लिए
THE ANNEXED CARD IS FOR THE REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY




श्री पं॰ जयशंकर जी
मु॰ पो॰ सोहाना
जि॰ रोपड़
(पंजाब)

4-7-73

श्री मान्यवर पं. जयशंकर जी आज श्री हरिराम जी का पत्र मिला है कि पूज्यपाद श्री जी महाराज को जलोत्सव 8-7-73 को आपके साहा ग्राम में मनाया जायगा गतवर्ष भी आपके यहां नहिं पहुंच सका इसवर्ष भी इसदिन एक रिसेप्शन के जरूरी शादि में सम्मिलित होना है श्री पूज्य चरणों के दर्शन करने की उत्कट इच्छा होने पर भी संभव है वंचित ही रहूं करबद्ध प्रार्थना चरणों में कर रहा हूं इस जलोत्सव के बाद यदि लहरा या पटियाला ~~[illegible]~~ में आना हो सके तो दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे। यहां मैं बदन है आप भी स्वस्थ। लिखने के दिन कोई रुकावट पड़ जाने



# बल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश"

साहित्यकार

साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, बाल-साहित्याचार्य, बाल-मनोविज्ञानाचार्य,

रजिस्टर्ड ए०डी०

४३, स्ट्रान्ड रोड,

पत्रांक बी०डी०८३३-६४

कलकत्ता -७, १०-३-१९६४

सेवा में

पूज्यपाद १००८

महामाहिम श्री मदभूत वागभवाचार्यजी महाराज,

केयरफ - श्री गोविन्द जी मिश्र

चांबुजा

भरतपुर

श्रद्धेय महाराज जी,

साष्टांगं दडंवत व प्रणाम ।

यह जानकर मुझे अपार हर्ष हुआ कि " श्री हरिशास्त्रीजी द्वारा रचित श्री ललिता सहस्त्र काव्यम् " आप की ही उदारता से प्रकाशित हुआ है। यथार्थ रूप में देखा जाय तो दयामयी मा ने एक ऐसे शुभकार्य की प्रेरणा देकर आपको ऐसे लोकोपकारी एवं कल्याणकारी कार्य का निमित्त बनाया जो आपकी विलक्षण सूझबूझ एवं अद्भुत गुण ग्राहकता का परिचय है। श्री हरि शास्त्रीजी की ऐसी सुन्दर सरस लालित्य से ओत प्रोत और इतनी उच्चकोटि की अनूठी रसिक रचना को प्रकाश में लाकर आपने जो साहित्य व धर्म की सेवा की है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोडी है। किमाधिकम्

यों वैसे मैं आपकी प्रखर प्रतिभा प्रकांड पांडित्य, एवं प्रभावशाली पुरजोर लेखनी के चमत्कार का आभास आपकी "श्री श्री विंशतिका शास्त्रम, श्री सप्तपदी हृदयम् श्री महानुभव शक्ति-स्तव आदि पुस्तकों से मिल चुका है जिन्हें अभी अभी ही पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सभी पुस्तकें अपने ढंग की आपकी अनूठी रचनाएं हैं। जिनमें आपके अन्तरात्मा की सच्ची पुकार एवं आपकी दैवी अनुभूति की दिव्य फलक हमें अलक्षित रूप से प्राप्त होती है। इन ग्रन्थों में आपने अपने हृदय को खोलकर रख दिया है जो आपके अपूर्व साधन-सिद्ध एवं दैवी कृपा प्राप्त होने का सफल परिचायक है। किमाधिकम्। माता के भक्तों के लिए आपने ऐसी अनूठी रचनाएं लिखकर बड़ा ही श्रेयस्कर कार्य किया है। अत: सब मिलाकर आपकी ये सभी पुस्तकें संग्रहणीय और रसास्वादनीय हैं। प्रत्येक भक्त जन को इन्हें अवश्य मगांना चाहिए। ऐसी उत्तमोतम पुस्तकों के लिए आपकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। श्री श्री विशंतिका शास्त्रम की २१ कारिकाओं में श्री विद्या के मूल तत्व एवं उनके अनुशीलन की विधि व महात्म्य तथा उसकी दार्शनिक पृष्टभूमि पर पर्याप्त रूप से तान्त्रिक प्रकाश पड़ता है जो खासकर श्री विद्योपासकों के लिए बहुत ही उपयोगी है। बिना मात की कृपा से ऐसी अनूठी बेजोड़ एवं अपने ढंग की सर्वोत्कृष्ट प्रभावशाली रचना प्रस्तुत करना कभी भी सम्भव नहीं है - किमाधिकम्। कई प्रकार की व्याख्या एवं हिन्दी टीका युक्त होने से इसकी सुन्दरता में चार चांद और लग गए हैं।

अत: इस प्रकार आपका यह सत्प्रयास पूर्णतया सफल होकर बहुत ही स्तुत्य एवं सराहनीय है जिसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। इस पुस्तक द्वारा आपने प्रत्यक्षत: साहित्य व धर्म की जो सेवा की है उसके लिए धार्मिक जगत आपका सदैव ऋणी रहेगा। वास्तव में यह सनातन धर्म और पृथ्वी आप जैसे धर्मनिष्ट, नैष्टिक, साधनसिद्ध और भगवद्भक्तिनिष्ट तपस्वी महानुभावों के बल

पर टिकी हुई है जिन्होंने धर्मोन्नति में अपना पूरा पूरा योगदान दिया है। धन्य है आपका जीवन। सचमुच आप पूरे निस्पृही और जीवनमुक्त महानुभाव हैं। यथार्थ में आज के दिन पतनोन्मुख सनातन धर्म की आप जैसे परम भागवदीय महानुभावों द्वारा ही रक्षा हो रही है अन्यथा यह कभी को रसातल पहुंच गया होता। मेरी तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप शतायु हो और सदैव सुखी व प्रसन्न रहें और इसी प्रकार अध्यात्मिक सत्साहित्य का सर्जन करते हुए श्रद्धालु भक्त जनों का इस दिशा में यथार्थ पथ प्रदर्शन करते रहें।

आज जब कि सनातन धर्म व संस्कृति का निरन्तर ह्रास हो रहा है नास्तिकता बढ़ती जा रही है तो इस युग में इन कलि दोषों के निवारणार्थ और विश्व कल्याणार्थ तथा जनता व जनार्दन की अध्यात्मिक उन्नति के लाभार्थ ऐसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन निस्सन्देह बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसके द्वारा अखिल ब्रह्मांड जननी व भोग मोक्ष प्रदायिनी श्री विद्या की महिमा आदि का प्रचार हो। इसके पठन पाठ से श्रद्धालु पाठकों को निस्सन्देह भगवती ललिता का अनुग्रह प्राप्त होगा।

आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा एवं अनुपम विद्वता देखकर मेरे मन में आपके दर्शनों की बड़ी प्रबल इच्छा हो रही है अतः एक बार यहां पधारें न। आपका सत्सगं लाभ हमें मिलेगा और आपके द्वारा भगवती ललितम्बा को प्रसन्न करने का रूपक बनेगा जो मेरी बहुत पुरानी तमन्ना है और ~~किसे~~ जिसकी पूर्ति के लिए मैं आप ~~जैसे~~ सुयोग्य और साधन-सिद्ध और सफल मार्ग दर्शक की निरन्तर खोज में हूं। किमाधिकम् - आप स्वयं योग्य हैं और सब कुछ समझने वाले हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका अनुग्रह मुझे आवश्यमेव प्राप्त होगा।

मेरे योग्य सेवा निस्संकोच लिखें। कृपया पत्रोतर दें।

सद्भावनाओं एवं शुभकामनाओं सहित,

सदैव आपके चरणकमलों का सेवक
बल्लभदास बिन्नानी
(बल्लभ दास बिन्नानी)

संलग्न:- एक टिकटदार लिफाफा जबाब के लिए ।

श्री

श्रीद्वारकादास
जि. झाँसी पो. बालाजी
त. झाँसी मु. आरी

श्री ।।

चौकी प्रभारी [illegible]
पोस्ट सैंपऊ.
सबडि० चौमपुर जिला भरतपुर
(राज०) दि० १५-११-९३.

परम पूज्य श्री विभूषित श्री बाबा महाराज के पुनीत चरण कमलों में कोटिशः साष्टांग प्रणाम स्वीकृत हो। उपरोक्त श्री चरणों की अनुकम्पा से सब कुशल मंगल है। श्री चरण तो अखिल कुशल एवं कुशलता मात्र के उद्गम हैं पुनश्च वह कुशल ही होंगे इस लिखने का महत्व ही क्या है? श्री चरणों के निर्देशानुसार कुशल समाचार की आदान प्रदान जीव मात्र तक ही सीमित है आनन्द कन्द अनन्त प्रभु "शिव" के लिये नहीं।

रानीजी के निधन का समाचार तो श्री चरणों को अवगत हो ही चुका है। तेरहवीं बरसी की जाय अथवा नहीं की गोवं आदि की आज्ञा के सम्बन्ध में भरतपुर श्री चरणों में पत्र समर्पित लिखा ही जा चुका है लेकिन श्री श्री चरणों के दर्शन करने से असमर्थ रहा. अब दिनांक ५/११/९३ मंगलवार को भरतपुर गया था लेकिन उसी दिन सुबह श्री चरण दिल्ली पधार चुके थे इसलिये दर्शन नहीं [illegible]

श्री तथा श्री पंडितजी महाराज के भरतपुर आगमन होने पर श्री चरणों के समाचार प्राप्त हुये। श्री चरणों की आज्ञानुसार बच्चों के पालन पोषण के सम्बन्ध में निवेदन यह है कि अभी वह मौसी जी के यहां आश्रित हैं लेकिन वह बहुत बूढ़ी हो चुकी हैं बहुत कमजोर हैं लेकिन फिर भी वह मान, [illegible] महीने [illegible] हैं वह यथाशक्ति उनका पालन पोषण करेंगी लेकिन चूंकि बच्चे छोटे हैं उनकी भी [illegible] रखना और वह भी कुछ कमजोर ही अतः उनके [illegible] जाते हैं उनको बेकारी तो बहुत ही रहन सहन भावना का. लेकिन और बच्चों के पालन पोषण की उतनी [illegible] इसलिये बना नहीं आता है कि अपने ही बच्चों की देखरेख नहीं हो पाती है तथा बच्चे सद्व्यवहार भी नहीं पाते तो औरों की उम्मीद भी क्या की जाये। बच्चों की नानी अवश्य ही हितचिन्तक हैं लेकिन वृद्धावस्था एवं कुछ [illegible] से बहुत ही कमजोर व सहयोग की अपेक्षा करने वाली हैं, तथा रखवाला भी है, लेकिन उनका हित अवश्य ही विशेष है। ये तो है बच्चों के पालन पोषण में आर्थिक सहयोग की बात। लेकिन कुछ भी हो जहां तक भी मुझसे हो सकेगा [illegible] पालन पोषण यथा सामर्थ्य

जीवन ही अन्त की कोशिश करूँगा। लेकिन
ये सारी बातें होते हुए भी शादी करना उचित है
या नहीं। चूँकि इसके भविष्यकार स्वामी हैं
इसलिए मैं निर्णय करने में असमर्थ हूँ। मैं
श्री चरणों के अनुग्रह की भिखारी हूँ कुछ दिन
बालक का हिताहित अपने अधिकार भार श्री चरणों
में ही आश्रित है अतः यह बालक स्वयं श्री
श्री चरणों के आश्रय है।
श्री पूज्य [illegible] महाराज की अनुमति भी अभी
न मिलने [illegible] मैं ही हूँ लेकिन यथासमिति
फिर भी इस विषय में श्री चरणों में पत्र समर्पित
करने के लिये आदेश दिया था। जो श्री चरणों
में समर्पित है अतः श्री चरणों की आज्ञा प्राप्त होवे
यही निवेदन है।

आपका चरण
रज किंकरी
[illegible]

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER




To
श्री श्री C/o V.D. [illegible]
हिन्दुस्तान [illegible]
दिल्ली नं० १८

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :– Sender's name and address :–
15/11/63
[illegible]
चौकी [illegible] सी० पट्टी
जोधपुर (राजस्थान)

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here

ओं

जी औंस आई कैम्प वा पोस्ट आफिस
खेतड़ी कॉपर परोजैक्ट,
जिला: झुंझनू (राजस्थान)

श्रीमान परम पूज्य मान्यवर 108 श्री स्वामी जी महाराज। दास का
आप के पवित्र चरणों ~~का~~ में प्रणाम स्वीकार हो। आत्र कुशलम
तत्रास्तु। काफी देर से आप की सेवा में पत्र डालने की
कामना थी, परन्तु आप का पता न होने के कारन पत्र न
लिख सका। बाबू केवल कृष्ण से आप का पता मंगवाया है।
और आप की सेवा में पत्र लिख रहा हूँ। आशा करता
हूँ कि आप को प्राप्त हो जाएगा। जब राजस्थान की
यात्रा का ~~प्र~~ परोग्राम बने तो कृपया इस दास
को भी यहाँ दर्शन देकर कृतार्थ करें। आशा करता हूँ
कि आप मेरा निवेदन स्वीकार कर लेंगे। और मन
की शांति के लिये कोई मन्त्र बताएं। आप का बताया
हुआ गैत्री का जाप तो थोड़ा बहुत कर लेता हूँ। अपने इस
अनाथ बालक पर दया दृष्टी रखें। अपनी कुशलता
का खत कृपया डालते रहा करें। यहाँ दर्शन देने
की जरूर कृपा करें। पत्र में कोई ~~भ~~ त्रुटी हो तो
अपना बच्चा जान कर क्षमा करना।

आप का बेटा
राजकुमार शर्मा

श्रीमान दत्त जी। जै शंकर।

ये पत्र स्वामी जी की सेवा में लिखा है। यदि वे यहां न हों तो कृपा करके उनके पते पर भेज दें।

आप का सेवक
राज कुमार शर्मा

← पहला मोड़ First fold →

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER







To
Sh. Swami Jee Maharaj C/o
Sh. Nitya Nand Datt
G Type Quarters No.: 491
Niwas puri, Ring Road
New Delhi 14

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

← दूसरा मोड़ Second fold →

ॐ

कालका
21/6/50

प्रातः स्मरणीय

परम पूज्य महाराज जी

के चरणों मे सादर नमस्कार

परमादरणीय!

मेरे मित्र शास्त्री जी ने मैनीवड की, की बाबत आपसे बात की होगी. मैं आज वर्कशाप से छुट्टी करके सीधा आपके चरणों मे पण्डित जी के घर पहुँचा पता चला आप नालागढ़ जा चुके हैं। 2/7 या 3/7 को आपके चरणों मे उपस्थित होऊंगा।

शास्त्री जी ने नालागढ़ के पोस्ट मास्टर को जिकर किया होगा जैसा कि उन्होंने मुझे बतलाया। मेरा साला नालागढ़ नहीं, बल्कि सोमशाला पोस्ट मास्टर लगा हुआ है।

बाकी बात आपके चरणों मे बैठ कर करूंगा।

पण्डित हरिराम जी और अन्य साथियों को सादर प्रणाम।

चरणदास

बालकृष्ण शर्मा

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




Maharaj Jee
c/o
Pt. Hari Ram ji Sharma
Near Gurudwara
NALA GARH
पिन PIN
(H.P)

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

[illegible]

पिन PIN

8/9/12

ॐ

जम्मूँ
10.4.77

श्रीजी,

जय शंकर

आप को पत्र न लिख सका क्योंकि नालागढ़ का पता ना लिखा था न याद ही रहा। अब आप का पत्र आने से मालूम हुआ कि आप नालागढ़ से 29.3.77 को सोहाना पहुंच रहे हैं। और फिर इन दिनों मैं भी अमृतसर गया और वहाँ 12 दिन लग गये। इन्ही दिनों में श्री गोविन्द जी का पत्र भी आया, उन को आप के सोहाना पहुँचने का लिख दिया है। आप से भी प्रार्थना है कि उन को पत्र लिख दें वह आप के स्वास्थ्य की चिंता कर रहे थे।

आप को यह जान कर प्रसन्ता हो गी कि जिस दिन हम पठानकोट पहुंचे उस के दूसरे दिन ही मेरा खोया हुआ सामान आप की कृपा से वैसे ही मिल गया। यह सामान हवाई महकमे के दो सज्जन जो किसी काम से जम्मूँ की ओर जा रहे थे उन को मिला और जो उस में दफ्तर के कागज़ थे उन की सहायता से दूसरे दिन 10½ बजे के समय के पास ही मुझे मेरे डिपू में वह मिल गये और सारा सामान बिल्कुल सुरक्षित मेरे हवाले कर दिया। इस से मुझे एक बहुत सुंदर अनुभव हुआ वह लिखा नहीं जा सकता। जब भी आप के दरशन का मौका मिले गा आप के चरणों में कहूँगा।

पुष्पा के बड़े लड़के देवराज की शादी तिथी 6.5/77 को हो रही है। वहाँ (मुज़फ्फ़रनगर) जाने के लिये हम यहाँ से 4.5/77 की शाम को गाड़ी से 5.5/77 प्रातः सहारनपुर उतर कर वहां से बस ले कर पहुंच जाएं गे। फिर वहाँ से 8.5/77 को दहली पहुंचें गे और दिल्ली से 11.5/77 को शाम की गाड़ी से जम्मू आ जाएं गे। अगर जब तक आप ने दहली चले जाना हो तो लिखें तो वहां आप के दर्शन कर सकें कृपा हो गी।

विनायक की परीक्षा 25.4/77 से शुरू हो रही है हमारी सब की ओर से आप के चरणों में प्रणाम सब लोगों को जय शंकर।

आप का दर्शन अभिलाशी
कुकु आनंद

अभी यहाँ किसी को भी मिल नहीं सका
जैसे जैसे मिलना होगा सब मिलने वालों
को जयशंकर कह दूँगा।

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




Shri Swami ji
c/o
Pt. Jata Shankar ji
SOHANA (Pb)
Near Chandigarh.

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—
K.K. ANAND
18-A/B, Gandhi Nagar
JAMMU TAWI-

पिन PIN 180004

7/5/71

श्री हरि

C-22
South Moti Bagh
New Delhi 110021
19.6.80

अनंत श्री विभूषित पूज्यपाद भगवान शंकरजी
के चरणों में सादर प्रणाम

आप का कृपा पत्र मिला पढ़ कर बड़ी
प्रसन्नता हुई कि आप का स्वास्थ ठीक है
और सोलन में गर्मी का प्रभाव नहीं है। यहां तो
बड़ा भयानक गर्मी पड़ रहा है।

बाबू सीतारामजी और उनके बच्चे अभी तक
विदेश से दिल्ली नहीं आये हैं केवल उनके
दामाद हो यहां हैं उनसे पता चला कि वह
सब लोग पंदरह जुलाई तक विदेश से लौटेंगे।

मालतीजी पूर्णतः स्वस्थ ठीक हो रही

सप्ताह में एक दिन शाहदरा एक दिन
रोकूजी के पास और एक दिन मदनगीर (?)
जाना है। आप को सादर प्रणाम कहना है।

गोविंद, श्याम, उमा तथा भाई सब
बालक स्वस्थ पूर्वक हैं आप के चरणों में
सादर प्रणाम कहते हैं।

श्री राधाकृष्ण व्यास जी (बीकानेर वाले के दामाद)
आप के चरणों में सादर प्रणाम कहते हैं। आपने
स्वप्न में उन पर कृपा की है। ज्वर ठीक हो गया है,
अभी कमजोरी थोड़ी है आशा है पांच सात दिन में
ठीक हो जावेंगे। आप को बहुत याद करते रहते
हैं। आप की कृपा के आकांक्षी हैं।

कौशल्या जी आप को बहुत याद करती है
और सादर प्रणाम निवेदन कर रही है।

आपका
देवी

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Redirected




श्रीमान् श्री ... पूज्यपाद
~~श्री ... शर्मा~~,
c/o Pt. Hari Ranji Sharma
~~Shri S.C. Sharma~~ Retd. D.C&S.O.
~~Dya Bhawan~~
~~Below Railway Line~~ ~~SOLAN (H.P.)~~
P.O. NALAGARH (H.P.) NALAGARH
पिन PIN ~~173212~~
(Via Ropar (PB)

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

...
C-22, South Moti Bagh
New Delhi
पिन PIN 110021




19/6/8




पत्र खोलने के लिए यहां काटिए TO OPEN CUT HERE

पूज्य महात्मा जी,

जय शंकर जी,

आप के चरणों में हमारा बार बार प्रणाम, काफी समय से हमे आप के विषय में कुछ भी पता नहीं चला और दो चार दिन पहले यह पता चला कि आप भरतपुर मे है। और आप की सेहत भी ठीक नहीं है। हमें यह जान कर बहुत फिकर हो रहा है। आप कृपया कर के शीघ्र ही अपनी सेहत के बारे मे पता देवे।

आप को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आप की कृपा से S. ने अपनी परीक्षा अच्छे अंक ले कर सफल हो गई है अब उसे कालिज में प्रवेश दिला रहे हैं। यह सब आप की कृपा है, वर्ना कुछ बिमार रहता है उस का इलाज चल रहा है अच्छा है ठीक हो जाए जय/और सब कुशल मंगल है आप अपनी सेहत के विषय मे अवश्य लिखते रहा करे। हमारे योग्य कोई सेवा हो अवश्य लिखे। अपनी सेहत का ख्याल रखे हमारी बार बार आप से यही प्रार्थना है। बच्चो की तरफ से और हमारी तरफ से आप को बारम्बार प्रणाम तथा जय शंकर.

आप के दर्शनाभिलाषी

आप के सेवक
जिया लाल गढ़ोला

पहले यहां काटिए TO OPEN CUT HERE →

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




Sawamiji C/o
Pandit Govind Missar
Chaubuja
Bharat pur (Rajasthan)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

J. L. Gandotra
B/60 H. H. F. Ltd
Jangpura, New Delhi
पिन PIN 110014.

पूज्य महात्मा जी,

जय शंकर जी,

आप के चरणों में हमारा बार बार प्रणाम, काफी समय से हमें आप के विषय में कुछ भी पता नहीं चला और दो चार दिन पहले यह पता चला कि आप भरतपुर में हैं, और आप की सेहत भी ठीक नहीं है। हमें यह जान कर बहुत फिक्र हो रहा है। आप कृपया कर के शीघ्र ही अपनी सेहत के बारे में पता देवें।

आप को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आप की कृपा से S. ली अपनी परीक्षा अच्छे अंक ले कर उत्तीर्ण हो गई है अब उसे कॉलेज में प्रवेश मिल रहा है। यह सब आप की कृपा है, वर्ना कुछ बिमार रहता है उस का इलाज चल रहा है अच्छा है ठीक हो जाए जय/और सब कुशल मंगल है आप अपनी सेहत के विषय में अवश्य लिखते रहा करें। हमारे योग्य कोई सेवा हो अवश्य लिखें। अपनी सेहत का ध्यान रखें हमारी बार बार आप से यही प्रार्थना है। बच्चों की तरफ से और हमारी तरफ से आप को बारम्बार प्रणाम तथा जय शंकर.

आप के दर्शनाभिलाषी,

आप के सेवक
जिया लाल गंधो[illegible]

ॐ ज्वालामुखी
१२-४-६६

श्रीमन् माननीय पूज्यपाद पीयूष जी
सादर चरणवंदना.

[illegible] कृपा पत्र मिला. बड़ी प्रसन्नता हुई.
आजकल परमपूज्य श्री आचार्यचरणजी भारत में ही
हैं तो मेरी चरणवन्दना पहुंचा देवें। श्री आचार्य जी
ने तो मुझ पर बहुत कृपा की. पर मैं लाभ न
उठा सका: ठीक विधि पूर्वक न तो उपासना की, न ही
पूरा समय दिया. अब मैं श्री आचार्य जी से कुछ
पूछना चाहूं तो कैसे पूछूं. अपने प्रमाद या आलस्य
से मैं स्वयं ही लज्जित हूं "स्व[illegible] विं०"
आदि पर चाहे कितना ही विश्वास हो परन्तु जब तक इसका
अनुभव न हो तो दुःख भावी होते ही रहेंगे. कई समस्यायें
हैं कि "अनेक जन्म संसिद्ध स्ततो याति परां गतिम्" परन्तु यह
बात भी समझ में नहीं आती, क्या किसी गुफा के भीतर
करोड़ों वर्ष के अन्धकार को नष्ट करने के लिये प्रकाश
को करोड़ों वर्ष लगते हैं? कभी सोचता हूं कि जिन
सत्व रज तम गुणों की प्रकृति में उपस्थिति है उनके
अनुसार ही प्राकृतिक क्रियायें होंगी, परन्तु चेतन
तत्व पर तो गुणों का प्रभाव ही नहीं होना चाहिये,
इत्यादि. इसलिये आपकी ही शरण हूं

चाहे ब्रह्म को चाहे उपकारी ॥

घरमें माताजी को प्रणाम।

कृपापत्र देते [illegible]

दास :

नन्दकिशोर वैराग्य

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता : SENDER'S NAME AND ADDRESS :-

पिन PIN

14/7/76

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

श्री

बी-६६ नानकपुरा
नई दिल्ली
२ जून १९७६

पूजनीय श्री गुरुदेव जी महाराज!

गुरुदेव के चरणकमलों में साष्टांग प्रणाम। पत्र आप का भेजा मिला। पत्र भेजने में विलम्ब बहुत हुआ। क्षमा करें। निर्मला की ओर से प्रणाम स्वीकार करें। आजकल यहां पर मैं और निर्मला ही हैं। बाकी सब घर (गांव) चले गए हैं।

निर्मला की परीक्षा ४-५ दिन हुए समाप्त हुई है। इसी कारण वह अभी तक यहां पर है वरन् वह भी घर चली गई होती। चार-पांच दिन के भीतर ही वह भी घर चली जावेगी। भूपाल परीक्षा में पास हो गया है वह कल तक यहां पहुंच जावेगा। अभी वह घर (गांव) में है।

आप अभी भरतपुर ही रहेंगे या शिमला या नालागढ़ की तरफ आप का जाने का विचार है। क्योंकि अब ही यहां गरमी बहुत अधिक हो गई। आप का क्या परोग्राम है। यदि आप पहाड़ पर जावेंगे तो क्या दिल्ली होकर जायेंगे, लिखें। निर्मला भी रविवार तक घर जाने को कह रही थी। यदि दिल्ली होकर जावें तो लिखें।

दामोदर जी कह रहे थे कि बख्शी जी दिल्ली आये थे। आपके बारे में पूछ रहे थे। उन्हें बता दिया था कि आप भरतपुर हैं।

श्री गोविन्द मिश्र जी को मेरी ओर से जय धोंकर।

पं० दामोदर जी तथा शिवराज की ओर से भी प्रणाम। वे लोग भी सकुशल हैं। रतनलाल जी का फोन आया था वे भी कुशल मंगल हैं। बाकी श्री राम सिंह जी के घर २०-२५ दिन हुए मैं गया था। उन का छोटा भाई जो यहां पर पढ़ता था और उन से अलग रहता था, उस ने अप्रैल के आरम्भ में (२-३ तारीख को) गाड़ी के नीचे आकर आत्म-हत्या कर ली थी। मैं वैसे ही राम सिंह जी से मिलने गया तब मुझे मालूम हुआ। राम सिंह जी ने बताया कि २ अप्रैल के सवेरे वह लड़का अपना सामान (बिस्तर आदि) लेकर क्वार्टर के पिछली तरफ छोड़कर जाने लगा तो अंदर से राम सिंह जी ने कहा कि अन्दर आ जाओ, कहां जा रहे हो तो उस ने बिना उनकी तरफ देखे उत्तर दिया कि अभी आया और चला गया। शाम तक जब नहीं लौटा तब उन्हों ने इधर उधर पूछ-ताछ की। कुछ पता न चला। चार अप्रैल को पुलीस ने उन्हें सूचित किया कि उसने आत्म हत्या कर ली।

आपका चरण सेवक
सीता राम कँवर

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी
द्वारा (c/o) श्री मिश्र गोविन्द
चौबुर्जी, भरतपुर
Bharatpur (Raj).

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

सीताराम कँवर
बी-५५ गौतम नगर
नई दिल्ली

पिन PIN

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

श्री हरि

C-22
South Moti Bagh
New Delhi 110021
1.6.80

परम पूज्यवर भगवान शंकर जी
के चरण कमलों में सादर प्रणाम

आप का कृपा पत्र मिला यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप सोलन पहुंच गए हैं और अभी वहीं पधारेंगे। देहली में तो बहुत गर्मी पड़ रही है। वर्षा के पश्चात ही कुछ शांत होगी। तब तक पहाड़ी क्षेत्र में रहना ही उपयुक्त होगा।

बाबू सीताराम जी और शिवमला आदि अभी तक वापिस नहीं आये हैं। श्री प्रेमलाल जी के यहां और श्री रवि प्राप्त [illegible]

आनन्दपूर्वक हैं और आप का कोई पत्र उन के यहां नहीं आया है यदि कोई आया तो आप की सेवा में भेज दिया जायेगा। श्री प्रेमलाल जी ने भी आप की सेवा में पत्र लिखा है।

जगद्गुरु शंकराचार्य जी का ब्राह्मण 25 दिनों से बिमार है आप के चरणों में प्रणाम निवेदन किया है। वह ठीक होने के पश्चात अपनी सुपुत्री का प्रस्ताव ले कर आयेगा स्वीकार कराने के लिये। उन्होंने ने जन्म कुण्डली मिलवा ली है और हर प्रकार से ठीक है।

देवी शकुन्तला गार्गी और आयुष्मती प्रकाश सिद्धार्थ साहित्य 19 मई को पंचो गये थे अभी तक वापिस नहीं आये हैं चार जून तक वापसी की सम्भावना है।

आप के चरणों की कृपा से नित्य 8 से 10 बजे तक सत्संग होता है। श्री पद्मराज

स्तोत्र तथा भगवान शंकर की स्तुति का पाठ बच्चे नित्य करते हैं। राम रक्षा स्तोत्र का पाठ सब करते ही हैं।

आप चंडीगढ़ वाले वैद्यजी की औषधि का प्रयोग यदि कर सकें तो उत्तम होगा। कुछ दिन वहां प्रयोग कर लें। बाकी आगे हुए आदेश साथ लाने की कृपा करें।

सब बच्चे आप को सादर प्रणाम कहते हैं। शास्त्री व सत्यपाल ने आप को आज्ञानुसार शुभ महूर्त में [illegible] भेज दिये हैं।

आप का
देवा

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




O.M.S.

सेवा में [illegible]
पूज्यवर [illegible] महाराज
C/o
Shri S. C. Sharma J.E
Daya Bhawan दया भवन
SOLAN सोलन

पिन PIN 173212

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

[illegible]
C-22, South Moti Bagh
New Delhi

पिन PIN 110021

28/9/1

॥ श्री ॥

Gwalior
12-4-76.

From:- मुन्नालाल अग्रवाल,
M.A., M.Com., LL.B.;
फील बिल्डिंग, जीवाजी गंज,
ग्वालियर (म०प्र०) 474-001

To

राज पण्डित श्री गोविन्द मिश्र जी,
चौबुर्जा बाजार, भरतपुर 321-001

पूज्यनीय मिश्र जी,

सादर चरण स्पर्श। आपके द्वारा भेजी हुई अमूल्य पुस्तक "श्री सप्तपदी हृदयम" प्राप्त हुई है। इस कृपा के लिए मेरा परिवार और मैं आपका हृदय से आभारी हैं। वास्तव में इस पुस्तक के बारे में मुझे ग्वालियर के श्री रामेश्वर पंडित जी ने बताया था। वे एक बार श्री खण्डेलवाल साहब के यहाँ से भरतपुर विवाह सम्पन्न कराने गये थे। वहाँ पं० रामेश्वर जी की आपसे मुलाकात हुई थी और आपने उनको यह पुस्तक भेंट स्वरूप दी थी। वे आपको काफी सम्मान देते हैं। और आपको याद करते हैं। शायद आपको उनका ख्याल आ गया होगा। यदि आप उनके लिए दो शब्द लिखेंगे तो उन्हें बहुत ही आनन्द और हर्ष होगा।

मैं कानून की पुस्तकों को लिखने का प्रयास करता रहता हूँ। कुछ प्रकाशन के रूप में पुस्तकें लिखी भी हैं। आपका आशीर्वाद होगा तो आगे इस दिशा में अवश्य ही सफलता मिलेगी। आपके चरणों की वन्दना करके आपसे आशीर्वाद मांग रहा हूँ। आशा है आप अवश्य ही आशीर्वाद देंगे।

'हिन्दू विधि' में विवाह के एक आवश्यक संस्कार 'सप्तपदी' को 'हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955' ने धारा सात में बताया है। इसमें यह लिखा है —
"Saptapadi (सप्तपदी) that is, the taking of seven steps by the bridegroom and the bride jointly before the sacred fire." ये शब्द कानून में लिखे हैं। इन शब्दों की व्याख्या न्यायालय ने यह की है

कि 'सप्तपदी' का तात्पर्य 'अग्नि' के चारों ओर वर-वधू द्वारा सात परिक्रमायें करना है। लेकिन मैं तो 'फेरे' हैं, न कि 'सप्तपदी'। मेरी बुद्धि काम नहीं दे रही कि वास्तविक स्थिति क्या होनी चाहिए। कानून के शब्दों की व्याख्या अपने हिन्दू धर्मशास्त्रों के आधार पर सही क्या हो सकती है — इसका निर्णय कृपा करके आप दीजिये तो देश के तमाम अबोध लोगों का कल्याण हो जावेगा। क्योंकि अब मैं सही बात अपनी पुस्तक में लिखकर 'सप्तपदी' का अर्थ कानून के विद्यार्थियों को समझाना चाहता हूँ।

दूसरे मैं यह जानना चाहता हूँ कि 'विवाह ~~पद्ध~~ पद्धति' हमारे किस वेद में से ली गई है — अर्थात 'सप्तपदी' का 'आदि स्रोत' कौन सा प्रामाणिक ग्रंथ है। उसी में 'सप्तपदी' की सही व्याख्या और इसको पूर्ण करने की विधि भी दी होगी।

मैं आपकी सेवा में बहुत ही सूक्ष्म भेंट स्वरूप रु. ५) पाँच रुपये भेज रहा हूँ। कृपया इसे स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें।

शेष शुभ —

आपके चरणों का सेवक,

पहला मोड़ FIRST FOLD

उत्तर 30-8-78 को

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

To,
राजपण्डित श्री गोविन्द मिश्र,
चौबुर्जा बाजार,
भरतपुर (राजस्थान)
पिन PIN 321001



इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

[illegible]

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

परम पूज्य श्री मान माननीय परम श्रद्धेय श्री जी के चरण कमलों में दासा नु दास का सादर प्रणाम स्वीकार हो।

अत्र कुशलं तत्रास्तु-

कृपा पत्र मिला समाचार जाना उत्तर में प्रार्थना यह है कि प्रभु आपको शीघ्रातिशीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करें।

और आपने मुझ पर कृपा करके जो गुप्त भारत की खोज नामक पुस्तक ले ली है सो यह आपकी अतीव ही कृपा है किन्तु आप लिखें कि मैं उस पुस्तक की कितनी कीमत आपके पास भेजदूं।

दूसरे आपकी आसानुसार सर्व सज्जनों को जो शंकर जी कह दी है और सब सज्जन आप को बहुत याद करते हैं और २१/१२/६१ को लाला सीताराम जी जैन शायद देहली आपके पास पहुंच रहे हैं। चंपूर के आपके खरड़ वाले रतनलाल जी की विवाह लग्न पत्रिका करना तय होगया है और उसके लिए मैंने ३/३/६१ का शाहा बतला दिया है चंपूर के १०/२/६१ के बाद नं. ने. मकर को हो जाता है लड़की का नाम शरला है फिर १३ मास

तक विवाह नहीं हो सकेगा
[illegible] के कुंभ के गुरु १२ भाव मे
आजावेगा.

शेष सब समाचार सब कुशल हैं योग्य सेवा से अनुगृहीत करें

आपका –
आज्ञाकारी

पं० भगवती प्रसाद ज्योतिषी
भृगु ज्योतिष कार्यालय कालका अध्यवर.

यदि आप उचित समझें तो आपके पास जब जैन साहब पहुंचें तो उनके हाथ ही पुस्तक को भेजने की कृपा करें।

---

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये




C/O Vaid Brahaspati Triguna

سیوا میں شری لوبھ شرما معرفت
معرفت وید برہسپتی دیو ترگنا - بھوگل
ڈاکخانہ جنگ پورہ - دہلی 14

New Delhi

पहला मोड़ — तीसरा मोड़ — दूसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-
पं० भगवती प्रसाद ज्योतिषी
भृगु ज्योतिष कार्यालय कालका अध्यवर.

श्री अपने तो इस विषय में कुछ प्रयत्न नहीं होंगे। परन्तु "सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम" इसका ध्यान करके "शरणागत को हैं बचाते प्रभु" फिर कैसे हमें तुम भूलोगी माँ।

हम छोड़ेंगे चरण तुम्हारे नहीं,
फिर कब लौं न दया उपजाओगी माँ!!

श्री आचार्य चरण आ रहा हूँ।

~~पत्नी मेरी बीमार है~~ लड़के ... का विवाह २१ माघ का नियत हुआ है आप ... आपकी यदि ... की कृपा को।

~~बिल्ली में~~ विषय क्या लिखूं।

मैं अपने मन की स्थिति को किन शब्दों में प्रकट करता हूँ। शायद मैं ही श्री आचार्य जी के कृपाभिलाषियों में सबसे न्यून हूँ और कि आपका विश्वास श्री श्री विधाता का पात्र आदि पढ़कर भी अपनी ही हूँ। यदि इसी भाँति पत्र देकर कृपा करते रहें।

आपका एक ...

... जगदीश ...

ॐ ज्वालामुखी
१८ पौष २०१७

श्रीमद् माननीय पूज्यपाद पंडितजी
सादर प्रणाम.

यहां कुशल है। आपकी कृपा पत्र मिला.
यह आपकी अपार बहुत दया है कि कभी २
ओर पत्र न जाने पर भी स्वयं पत्र भेज देते हैं
श्री पूज्य आचार्य चरणों में मेरी ओर से
चरणवन्दना कर देवें. ईश्वर कृपा करें ताकि
श्री आचार्य जी का स्वास्थ्य उत्तम बना रहे. इनके
घूमने फिरने से भूमि पवित्र होता है और शुद्ध
ओर दासजनों को शान्ति अवश्य प्राप्त होती
रहेगी. [illegible] इस ओर कब तक श्री आचार्य चरणों
का आगमन होगा? श्री श्री विद्यापति का शास्त्र
का पाठ दूसरी बार कर चुका हूं. परन्तु जब
तक प्रतिक्षण अपने स्वरूप को न जान सके
[illegible] जाग्रद् अवस्था के भाव दुःखादि में सुखी-
दुःखी होता है तो उसके लिये "आत्मस्वरूप
प्रभु प्रीति केवल नित्य आत्मनि स्वकला
कल्पितानीति विलसत्यपि सन्ति नो" यह
शास्त्र पाठ मात्र ही रहेगा। गुड़ मीठा होता है
इतने मात्र से थोड़े ही आनन्दानुभव हो सकता है.

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER




श्री पं. गोविंद मिश्र जी
C/o श्री वैद्य व हरप्रीत देव जी (त्रिगर्त)
भोगल रोड
पो. जंगपुरा
देहली नं. १४

← तीसरा मोड़ Third fold →

भेजने वाले का नाम और पता :– Sender's name and address :–

नन्दकिशोर वै.
ज्वालामुखी
जि. कांगड़ा (पंजाब)




इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here →

पहला मोड़ First fold
दूसरा मोड़ Second fold

श्री: [illegible]
दि 26.5.60

…पूज्य श्री १०८ आचार्य चरणों में सादर प्रणतिपूर्वक नमस्कार।
…1-5-60 का लिखा हुआ कृपापत्र मुझे आज स्कूल खुलने पर 26.5.60
… प्राप्त हुआ है, मेरा पहले से लिखा हुआ पत्र आपको
मिला नहीं होगा, सम्भवतः इधर दिनों मिल गया होगा।
…निका (?) न आसकने का कारण उसमें लिख ही दिया था
…सप्ताह में चला था। कल 25.5.60 को घर आया हूं।
…ह दिन की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला है, आप कृपा करके
…देने की कृपा करें कि क्या मैं इस छुट्टी को दिल्ली आऊं?
…के अतिरिक्त आपका मैंने पहले पत्रों में लिख दिया था, कि
नहीं। वह L.D.C. की पोस्ट पर कुल 223 रु.
…मासिक रहा है। सैन्ट्रल एक्साइज (Central Exice)
…क है। आपने मुझे लिखा था कि B.A. (English) की
…। अभी तक वे लोग उसने स्वयं रचना से विवाह की स्वीकृति
…स्पष्ट) मैंने लिख दिया है कि हम अब श्री १०८ आचार्य चरणों
…की सम्मति स्वीकार करेंगे। आपकी आज्ञा का
…हम भी नहीं करसकेंगे। यद्यपि उनकी इच्छा B.A.
…पास ही लड़की स्वीकार करने की थी। अस्तु।
…पता को लड़का आवश्य देख लेना चाहिये, क्योंकि
…शरीर की लम्बाई, चौड़ाई, रूप, काठ आदि देख कर और
…के लिये काम करने उचित होते हैं। क्योंकि लड़की वाला
…के, लड़की को देख कर ही योग्यायोग्य का पता कर सकता
…ले को तो केवल लड़के को ही … है। तो उन्हें लड़
…देख लेना चाहिये। शेष सभी आनन्द मंगल है।

आप कब तक दिल्ली में रहेंगे? जहां भी पधारें
अपना पत्र व्यवहार का पता अवश्य लिखने की कृपा
करें।

भवदीय
नन्दलाल।

श्रीः नरपुर (के ग्रोत:)
दि 26.५.60

तत्रभवत्सु श्री १०८ आचार्य चरणेषु सादरं प्रणतिपुरस्सर नमस्कारः।

आपका २१-५-60 को लिखा हुआ कृपापत्र मुझे आज स्कूल खुलने पर 26.५.60 को मिला, मालूम होता है, मेरा वैशाख में लिखा हुआ पत्र आपको अभी तक मिला नहीं होगा, संभवत: इधर दिन नहीं मिल गया होगा। मैं इसी शनिवार को न आ सकने का कारण उसमें लिख ही दिया था कि मैं एक सप्ताह से बाहर था। कल २५.५.60 को घर आया हूं। आज चौदह दिन की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला है, आप कृपा करके शीघ्र ही पता देने की कृपा करें कि क्या मैं इस शनिवार को दिल्ली आऊं? मदनलाल के ऑफिस का पता मैंने पहले पत्रों में लिख दिया था, घर का पता नहीं। वह L.D.C. की पोस्ट पर कुल १२३ रु. पर काम कर रहा है, सैन्ट्रल एक्साइज (Central Excise) महकमे में क्लर्क है। आगामी सितम्बर में B.A. (English) की परीक्षा देगा। अभी तक वैसे उसने स्पष्ट रूप से विवाह की स्वीकृति नहीं दी, परन्तु मैंने लिख दिया है कि हम अब श्री १०८ आचार्य चरणों से अनुमोदित सम्बन्ध स्वीकार करेंगे। आपकी आज्ञा का उल्लंघन वह भी नहीं कर सकेगा। यद्यपि उसकी इच्छा B.A. करने के अनन्तर ही सम्बन्ध स्वीकार करने की थी। अस्तु। लड़की के पिता को लड़का एक बार अवश्य देखना चाहिये, क्योंकि लड़के के शरीर की लम्बाई, चौड़ाई, रूप, काठ सभी देख कर और मिलान करके ही सम्बन्ध करने उचित होते हैं। क्योंकि लड़की वाला दोनों (लड़के, लड़की) को देख कर योग्यायोग्य का पता कर सकता है, लड़के वाले को तो केवल लड़के का ही पता होता है। सो उन्हें लड़के को अवश्य देखना चाहिये। शेष शुभ आनन्द मंगल है।

आप कब तक दिल्ली में रहेंगे? जहां भी पधारें अपना पत्र व्यवहार का पता अवश्य लिखने की कृपा करें।

भवदीय
नत्थूलाल:

यहाँ काट कर खोलिए To open cut here

अन्तर्देशीय पत्र

INLAND LETTER



श्री१०८ आचार्यचरण

c/o,

Sh. Brihaspati dev ji Triguna vaidya

" त्रिगुणायत-आयुर्वैदिक चिकित्सा केन्द्र "

Bhogal Road - Jangpura

Delhi 14.

तीसरा मोड़ Third fold

26/4/60

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

Nandlal Shastri, Sanskrit teacher

Govt High School,

Nandpurkesho.

Distt: Patiala

Panjab



28/4/60

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

ॐ

१८-१-६६
मुंगेर-(बिहार)

पूजनीय गुरुजी,
सादर प्रणाम

आज श्री शिवराजजी का पत्र प्राप्त हुआ और विदित हुआ कि आप दिल्ली में ही हैं, जानकर अपार हर्ष हुआ है। व्यापार कार्यवश फरवरी अंतिम सप्ताह से पहले आना सम्भव नहीं हो सकेगा। अगर आपकी दया हुई तो आपका दर्शन हो सकेगा, क्योंकि कुछ उलझनों के कारण श्री शिवराज जी के पास जाना सम्भव नहीं हो सका, इस धृष्टता के लिए आपसे क्षमा चाहता हूं।

आगे आदरणीय श्री पंडितजी मेरे साथ बिहार के दौरे पर आए थे, उनका अमृतमय प्रवचन बिहार के कई बड़े नगरों में विधिवत उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। मुझे आगे आसाम तक जाना था और हर बड़े स्टेशन पर कम से कम १० दिन लग जाते थे, इसलिए गुरुजी ने आगे मेरे साथ न चलने का संकल्प ले लिया और वैद्यनाथ धाम से वापिस गए हैं, श्री शिवराजजी का पत्र मैंने उनको भेज दिया है, वह आपके बारे में जानने के लिए बहुत समय से चिंतित थे, अतः या तो वह स्वयं आपके पास दिल्ली आयेंगे या पत्र लिखेंगे। (अपराधों को क्षमा करें)

बुधवार ता० २१ को आसाम मेल से मैं सिलीगुड़ी (W.B.) चला जाऊंगा।

आपका सेवक-
शिवानंद

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवा में-
पूज्यनीय गुरुजी
c/o श्री सीताराम जी
बी-६६, मानकपुरा
नई दिल्ली
पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

शिवमोहन गुप्ता
c/o मै. देश सेवक
चौक, मुंगेर (बिहार)
पिन PIN

18/1/76

श्रीः

शिवोदय भवन (व्यास जी का नोहरा)
चौपासनी रोड़, सरदारपुरा
जोधपुर 342003
दि. 15.4.78

प्रियवर श्री देवीप्रसाद जी,

सस्नेह नमस्कार।

आपका कृपा-पत्र अभी मिला। आवश्यक होने के कारण तुरन्त उत्तर भेज रहा हूँ। महाष्टमी के पाठ के विश्राम में उठकर उत्तर लिख रहा हूँ जिससे कि यह सोमवार तक अवश्य मिल जाय। एक पत्र कल ही मैंने पं. दुर्गादत्त जी के पते पर भेजा है; आपने जो बात आचार्यचरण के बारे में पूछ कर लिखी सो कुछ भ्रान्ति हो गई है- पं. दुर्गाप्रसाद जी के बारे में किस स्तोत्र की बात हुई यह ध्यान नहीं आ रहा। वहाँ पर मैंने यह निवेदन किया था कि जोधपुर में पं. बलजिन्नाथ के दामाद श्री द्वारकानाथ पण्डित मैनेजर स्टेट बैंक के रहते हैं, उनका स्थानान्तरण चण्डीगढ़ हो गया है, वे वहाँ हैं या नहीं, यह सूचना जोधपुर से भेजूँगा, सो यह सूचना श्री दुर्गादत्त जी को लिख दी है कि श्री डी. एन. पण्डित जोधपुर से चण्डीगढ़ चले गये हैं परिवार यहीं है, 17 मई के बाद ये लोग भी चण्डीगढ़ चले जावेंगे यदि आचार्यपाद जोधपुर पधारते हों तो यह सूचना मिलने पर उन्हें भी दे दूँगा। [illegible] ही बात वहाँ हुई, जो मैंने लिख दी है।

स्तोत्र की बात भिन्न है। [illegible] चरण प्रणीत श्रीमन्दाक्रान्ता स्तोत्र की हिन्दी टीका मैंने लिखी है। यह पुस्तक मे[illegible] मित्र छपाना चाहते थे अपने व्यय से- इसकी प्रेस कॉपी Fair तैयार कर मैंने उन्हें भेज रखी है, पिछले वर्ष उनका स्थानान्तरण डूँगरपुर से आबू हो गया, कुछ अन्य कारणों से वे परेशान रहे- प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है, लेकिन हो जायगा, नहीं तो मैं स्वयं करा दूँगा।

आचार्यचरण के एक श्रेष्ठ शिष्य पं. बलजिन्नाथ जी ने 'श्रीमहाअनुभवशक्तिस्तव' पर एक लघु टीका लिखी है, यह भी वर्षों से मेरे पास थी, मिल नहीं रही थी, मिल गई है, इसका हिन्दी अनुवाद भी तैयार है, कुछ Finishing Touch देना बाकी है, मैंने श्री बलजिन्नाथ जी को भी इसके लिये लिखा था, उन्होंने कुछ और संस्कृत टिप्पणी तथा उपोद्घात लिख कर 4, 5 दिन पहले भेजी है, इसका अनुवाद और तैयार करके इस संस्करण में मेरा हिन्दी पद्यानुवाद और रचना सम्बन्धी श्लोकों को साथ ही प्रकाशन होगा। इन दोनों पुस्तकों को किसी प्रेस में 10, 15 दिन बाद दे दूँगा और दोनों नहीं तो एक पुस्तक का प्रकाशन इस वर्ष में आचार्यचरण के जन्मोत्सव से पूर्व अवश्य हो जायगा। छपने पर पुस्तकों की जितनी प्रतियाँ भरतपुर, जयपुर या शिमला भेजनी होंगी, भेज दी जावेंगी। 500 पुस्तकों का संस्करण होगा। ये सभी बातें आप मेरी ओर से निवेदन कर दें। यदि श्रीमार आचार्य चरण के कुछ अन्य निर्देश हों तो उन्हें भी लिख भेजने का कष्ट करें।

श्री गोयल साहब से मैं 2, 3 दिन बाद मिलूँगा, तब जैसा होगा, आपको लिखूँगा।

मैं दि. 7.4.78 को दोपहर को बस से ही आ सका। वहाँ 6.4.78 को विश्राम कर लेना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहा।

भारती की परीक्षाएं 19.4.78 से हैं। बच्चों की हो गई हैं, पेपर ठीक हुए हैं। सब बच्चे प्रणाम लिखाते हैं। इसी प्रकार कभी कभी पत्र लिखते रहा करें।

सौ. श्यामा जी व बच्चों के लिये स्नेहपूर्ण शुभकामनायें। शमिति।



शुभैषी
[illegible]

जोधपुर

आदरणीय मौसाजी एवं मौसीजी

सादर नमस्कार

आज ही आपका पत्र प्राप्त हुआ। हम सब लोग यहाँ पर स्वस्थ हैं एवं आप लोगों की प्रसन्नता ईश्वर से नेक चाहते हैं।

यह कैसा नियति विधान है कि मुझे अपने भाई-बहनों के विषय में ही कुछ जानकारी नहीं है। मैंने ही पत्र लिखने में पहलकदमी की है, अतः मैं आशा करती हूँ कि अपना परिचय लिखते हुए पत्र का प्रतिउत्तर अवश्य ही मुझे हर भाई-बहन से मिलेगा।

मौसीजी! आप भी समय निकाल कर कभी कभार ही सही पत्र लिख दिया करें।

मेरी परीक्षा 18 अप्रैल से एवं बीना की एक मई से है। यहाँ पर हमने अभी दुर्गा-पूजन किया है। मम्मी आपको याद कर रही हैं। पत्र अवश्य लिखें।

आपकी
भारती सारस्वत

पत्ता यहाँ पर काटिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




Try: B317 Janta

पं० श्री देवी प्रसाद जी बोहरा सारस्वत
बंगला नं० B-137, जनता कॉलोनी
जयपुर-4
302004 पिन PIN JAIPUR

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

पहला मोड़

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

[illegible]
[illegible]
जोधपुर

पिन PIN 342003



२५- ३-६१

२०९३

श्री पूज्य-चरणों मे चौनन्दानकी
कोटिशः प्रणाम

आपके स्वास्थके सम्बन्धमें अहर्निश
ध्यान रहता है श्री गोविन्द जी के पत्रसे
ज्ञात हुआथा कि पहलेसे कुछ ठीक
होरहे हैं चिन्ता की कोई बात नही है
आप सुविधा होनेपर दर्शनार्थ जब आज्ञा
चाहे आमें क्षमा चाहताहूं कि जब आनेका
प्रोग्राम बनाताहूं तभी कोई न कोई विचारों
का रूप बिगड़ जाताहै उसीमें उलझ जाताहूं
कुछभी नही सूझ रहा नतो इनसे प्रभु
पिछाड़ी छुड़ाते है नही स्वास्थही देतेहै
पता नही कैसा भोग चल रहा है
अभि क्या क्या परिक्षायें देनी पड़ेगी
पिताजी की अर्धांगिनी हाय हाय इस समय
शीरदर क्योंकि वह [illegible] नही

नही बैठ सकते है शुआही ८ बजे दुकानपर मेरे पास ही
आकर बैठ जाते है ११ बजेतक यही ध्वनी सुनता रहताहूं
१ बजे फिर आजाते है ५ बजेतक। दिनकी यह हालत है
घर मे भोजकी बावत आज पसीने आरहे है आज दर्दीये
लगी हैं आज बोल नही निकलता इत्यादि इत्यादि
मधुसूदनजी की प्रचण्ड चेष्टायें तो बालक पनही
विक्षुब्ध करदेती हैं जब शुरू हो जांय
क्या क्या सुनाउं आप सर्वज्ञ है अतः परिवार
की इच्छापूर्तीयों केलिये अथक परिश्रम करते
हुएभी अपूर्ण ही रहती है आमदन व्यय अधिक
एसी स्थिती हैं। चित्त कहता है श्रीचरणों के दर्शनकर
कृतार्थ बनूं आपकी दृष्टि होनेपर सेवक समय
पासकेगा ऐसा विचार है तभी ~~[illegible]~~ कृतार्थ बनूंगा

~~[illegible]~~ कृपया स्वास्थ का पता दें और साथही
यहभी लिखें कि आप कबतक देहली मे ठहरेंगे

नं २ मेरा बड़ा लड़का जो आयुर्वेदिक कालेज
पटियालेमे द्वितीय वर्ष समाप्त कर के अगले
तृतीय वर्ष कोर्स मे जावेगा उसकी लग्न मेष है
लग्नमें ~~[illegible]~~ चलितमे लग्नमे सूर्य शनि है १२ मीन
मे शुक्र है १० मे मंगल है ६ का चन्द्रमा है अष्टम
राहु है [illegible] बृहस्पति लग्न द्वादश संधिमे है इस समय

(शुभमहा दशा मे राहुका अन्तर चलरहा है
२०१९ के २७ जेष्ठतक रहेगा  आपने मेरेको एकबार
कहथा कि इसका विवाह २२ वर्षके बाद करना २२ मा
वर्ष वो २७ चैचको खतम होजावेगा राहुका अन्तर
१ वर्ष कुछ और जादे रहेगा  रिस्ते शादी नाले जोर लगारहे है
मैने तो सभीको ऐसा कहाहै कि मैं विवाह १९६३
के नवम्बरमे ही करूंगा राहु अन्तर निकलनेपर वर्षभी
कासीका चौथा रहेगा  क्या यह ठीक है आपकी
सम्मति क्या है वैद्य कं:

छोटे लड़के के केवल राहु अन्तर
से ही प्रभावित है केतु अन्तर २०१८ के २६ भादों तक
चलेगा इसके प्रभावतो उससमय दिखा था का
तीसरे दिन आक्षेपों का दौरा हररोज ८ बजे होता
रहा होमियो पैथीक दवासे बंद होगया पुन: अब
तक दवा चालु है पुन: आक्रमण नही हुआ इलाज
होम्यो  मैं प्रात: संध्या १ माला गायत्री के
बाद १ माला महामृत्युंजय की भी नित्य जपवाता हुं यह
बालक प्रेमपूर्वक करताभी है  एक मैने अपने विचार
से भी शीघ्रता करली है बेशक आपकी आज्ञा भी थी
वो यह है कि गत सूर्य ग्रहण मे स्नान आदि करवाके
कुशा शतधा बेठाया जो ही बड़ काम आपद्धारणाम
कुरू कुरू बड़काय ही इसकी ११ मालाएं ...
राचिको नित्य १ माला करता है क्या यह ठीक है x

[illegible]

EXPRESS DELIVERY

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

2035





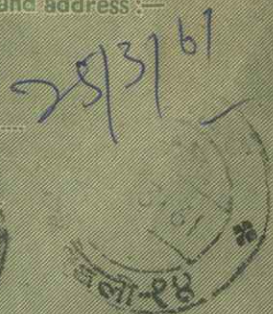
To
श्री अन्तर [illegible]
Niranjan Lal Jain,
C/o वैद्य [illegible]
Budh Ki Hat
भोगल रोड़ जंगपुरी
Bharatpur
देहली नं. १४
(Rajasthan)

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—





25/3/61

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये  NO ENCLOSURES ALLOWED

ओ३म्

ज्वालामुखी
१२-८-७८

श्रीमत् पूज्य आचार्य चरणों में
नन्दकिशोर के प्रणाम स्वीकार हों।

प्रायत्र तत्रास्तु। कुछ दिन पहिले श्री पं. नित्यानंद जी रकाड़ निवासी द्वारा आपका कुशल समाचार मिला. मैं कई कारणों से आपकी सेवा में पत्र न लिख सका जिनमें प्रधान कारण नियत समय पर पूजा न कर सकना भी है. मैं आलस्य या प्रमाद वश आपकी शिक्षा दीक्षा-अनुसार आचरण न कर सका हूं इसलिये लज्जित भी हूं. प्रायः और अतिरिक्त कोई भी ऐसा व्यक्ति न होगा जो इतने लंबे समय तक आपकी कृपा तथा स्नेह प्राप्त करके भी अपने स्वरूप का अनुभव प्राप्त न कर सका हो. सुना है कि आप नंगल आदि स्थानों पर आते रहते हैं अब जबभी इस ओर आपका कार्यक्रम बने तो मुझे भी सूचना भेजदें ताकि मैं वहां आकर आपको ज्वालामुखी ले आऊं।
मेरे योग्य कोई सेवा हो तो लिखें।

दास:—
नन्दकिशोर वै.



........ दूसरा मोड़ SECOND FOLD ........

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD




सेवा में :-

पूज्यपाद श्री प्रमत्त वागभवाचार्य जी

द्वारा :- श्री शिवराज शर्मा जी

10/15 ब्लाक

राष्ट्रपति भवन - नई दिल्ली

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

16/8/4

नन्दकिशोर वै.

ज्वालामुखी (हि.प्र.)

पिन PIN







श्री

लुधियाना
17-1-68.

श्री चरण कमलों में अनन्त बार प्रणाम.

श्री जी सब से पहले आप का पता श्री बाबु सन्तराम जी नालागढ़ से मिला। अभी दो दिन ही हुए थे कि फिर आपका पत्र मिला। बहुत-बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस समय मैं एक शादी के कपड़े सी रहा था। बारात दूसरे दिन जानी थी। आशा थी कि आपके दर्शन कर सकूँगा। इसी कारण खत भी नहीं डाला था। मगर कामकाज शादी वालों का और बढ़ गया। इस कारण से रोपड़ न पहुँच जा सका। ख्याल किया कि मैं देहली को पत्र डाल दूं। फिर उसके कुछ दिनों बाद आपका सन्देष ले कर श्री रतन लाल जी लुधियाना पहुँचे। मगर मैं उन्हें घरपर न मिल सका। घर वालों ने उन्हें ठहरने के लिये कहा तो वह एक मिनट से ज़िआदा न ठहरे। आपके चंडीगढ़ के निवास का पता और सन्देश एक पत्र पर लिखकर चले गए। चूँकि वह अधिक देर न ठहरे थे और घर वाले भी उन्हें बता न सके कि दास बीमार है। मुझे श्री रतन लाल जी के जाने के बाद बीमारी की हालत में दर्शन न करने का बहुत दुःख हुआ। अब एक सप्ताह हो गया है। मैं अब ठीक हूँ। लगभग एक महीना काफी बीमार रहा। यह सब कुछ निरसन्देह आप को सुना रहे हैं। बाकी दिल की अवस्था आप से छुपी हुई भी क्या है।

सो हाथ जोड़ कर अर्ज़ करता हूं कि जब भी
आप इधर आएँ तो लुध्याना इसी पते पर
पहुंच कर दर्शन देने की कृपा करें। बेशक
मेरे पास मकान भी अच्छा नहीं लेकिन
आपके लिए कहाँ क्या नहीं हो जाता।
बाकी मैं हर तरह ठीक हूं शान्त हूं
और कोई ऐसी गड़बड़ वाली बात नहीं है।

अर्ज़ है

निभागो कि मस्तको के दुअक्षरों
को मिटा कर सुभाग्यता देने वाले श्री
चरणों की रज का अभिलाषी।

श्री चरण कमलों का दास।

श्री कन्के लाल
रतन लाल
और भी जो सज्जन है
उनको जय शंकर।

दास

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER




17/?/58

श्री जी
C/o V.D. Bakhsi Kothi No 33A
Hindustan Housing Factory
Jangpura - 14
New Delhi - 14.

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold



भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-
Ramji Das
C/o Prem Chand Ved Parkash
(Cloth merchants)
Gill Road Dashmesh Nager
Ludhiana

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED